॥ श्रीहरिः ॥

384▲

विवाहमें दहेज

(वर्तमान समयका एक बड़ा पाप)

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR

हनुमानप्रसाद पोद्दार

॥ श्रीहरिः ॥

विवाहमें दहेज

(वर्तमान समयका एक बड़ा पाप)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

हनुमानप्रसाद पोद्दार

॥ श्रीहरिः ॥

विवाहमें दहेज

वर्तमान समयका एक बड़ा पाप

यद्यपि भगवान्‌पर विश्वास करके उनके अनन्य शरण हो जानेपर मनुष्यके सारे दोष अपने-आप समूल नष्ट हो जाते हैं और उसके समस्त योगक्षेमका वहन भगवान् स्वयं करते हैं, परंतु ऐसी स्थिति बहुत सहज नहीं है। सच्चे साधनके फलसे नित्य भगवत्कृपाका अनुभव होनेपर ही भगवान्‌में पूर्ण और अलौकिक विश्वास पैदा होता है और तभी मनुष्य अपने समस्त बल, लोक-परलोक और भोग-मोक्ष सब प्रभुके चरणोंपर अर्पण करके उनके अनन्य शरण होता है। क्षणविश्वासी या अल्पविश्वासी साधारण लोग

इस अवस्थासे बहुत दूर रहते हैं। वे भगवान्‌के गुण और माहात्म्यको सुनकर कभी-कभी विश्वासकी ओर कुछ झुकते हैं परंतु पर्याप्त आगे बढ़नेसे पहले ही कई प्रकारकी बाधाएँ पाकर रुक जाते हैं। इन बाधाओंमें कुछ तो पूर्वकर्मोंके प्रतिबन्धक होते हैं और कुछ वर्तमान कालके सङ्ग, स्थिति आदिके कारण उत्पन्न हुई रुकावटें होती हैं। ये बाधाएँ अनेक हैं, परंतु इस समय साधारणतः उनमेंसे धनकी चिन्ता एक प्रधान बाधा है। धनकी चिन्ताका कारण उदरपूर्ति या परिवार-पालन ही कहा जाता है, परंतु वास्तवमें मूल कारण दूसरा है—वह है हमारी काम-भोगपरायणता। विषयोंके उपभोगको ही परम पुरुषार्थ और परम आनन्द माननेवाले मनुष्योंकी चिन्ताएँ

मृत्युकालतक भी दूर नहीं होतीं, क्योंकि ऐसे लोग अपनी स्थितिके अनुकूल साधारण सादा जीवन बिताना भूल जाते हैं। फलस्वरूप उन्हें रात-दिन धनकी इतनी चिन्ता करनी पड़ती है कि उसके सामने भगवान् और धर्मका चिन्तन या विचार तुच्छ, अनावश्यक और कभी-कभी त्याज्य हो जाता है और वे सब कुछ भूल काम-क्रोधपरायण होकर अन्यायपूर्वक धन-संग्रहके कार्यमें लग जाते हैं। यों करते-करते ही उनके जीवनके दिन पूरे हो जाते हैं। बहुमूल्य, दुर्लभ मनुष्य-जीवन पाप-ताप बटोरनेमें ही व्यर्थ बीत जाता है। यह इतनी बड़ी हानि होती है, जिसकी बड़ी कठिनतासे भी पूर्ति नहीं होती और समय हाथसे निकल जानेपर कुछ बेहद पछताना पड़ता है।

मनुष्य यदि चाहे तो प्रारब्ध या संचितजनित प्रतिबन्धकोंको भी दूर कर सकता है, पर वर्तमान कालके सङ्ग और स्थितिसे उपजी हुई बाधाओंको तो मिटा सकनेमें कोई संदेह ही नहीं है। यदि वह सङ्गको बदल डाले और हृदयमें कुछ बल संचय करके कुसङ्ग और दुर्बलतावश होनेवाले प्रमाद और अकर्तव्य कार्योंको छोड़ दे तो ये बाधाएँ सहज ही दूर हो सकती हैं। वास्तवमें हमें अपने और परिवारके लिये साधारणतः अन्न-वस्त्र संग्रह करनेमें उतनी कठिनता नहीं है। कठिनता तो यह है कि हमने अपनी आवश्यकताएँ बहुत अधिक बढ़ा ली हैं और उनकी किसी-न-किसी प्रकार पूर्ति करनेमें ही कर्तव्यकी इतिश्री समझ रखी

है। यदि हम ध्यान देकर देखें तो व्यक्तिगत और समाजगत ऐसे हजारों अवसर हैं, जिनमें हम बहुत धन खर्च किया करते हैं, परंतु जहाँ बिना खर्च किये ही काम मजेमें चल सकता है, ऐसे अवसरोंपर खर्च करनेकी आवश्यकता हमने उत्पन्न कर ली है; वस्तुतः है नहीं। खाने-पहनने तथा गृहस्थीके दूसरे-दूसरे कार्योंके लिये हम ऐसी बहुत-सी चीजें खरीदते हैं, जिनके न खरीदनेसे हमें अपने जीवन-यापनमें कोई रुकावट नहीं होती। उदाहरणके लिये, मनुष्यका दो कपड़ोंमें काम चल सकता है, पर वह चार-पाँच पहनता है। खानेमें मिठाई अथवा बहुत तरहकी तरकारी, अचार आदिके बिना कोई अड़चन नहीं होती, परंतु इनमें बहुत व्यय किया जाता

है। छोटे साफ मकानमें रहा जा सकता है, पर दिखावेके लिये बड़ी-बड़ी इमारतें बनवायी जाती हैं। शाल-दुशाले, इत्र-फुलेल, साबुन-क्रीम, फरनीचर आदि हजारों प्रकारके शौकके सामानमें पानीकी-ज्यों पैसा बरबाद किया जाता है। यह तो व्यक्तिगत बात हुई। समाजमें ब्याह-शादी, कर्णछेदन, जनेऊ, मरण आदिपर इतनी बुरी तरह खर्च किया जाता है कि जिसका दुःख पीढ़ियोंतक भोगना पड़ता है। सैकड़ों अच्छे-अच्छे घराने इस व्यय-भारसे दबकर नष्ट हो गये और होते जा रहे हैं। इधर वर्षोंसे खर्च घटानेकी तथा रीतियोंमें सुधारकी बात चल रही है और अनेक प्रकारके परिवर्तन भी हुए हैं, परंतु खर्चकी रकम घटनेके बदले बढ़ी है। खर्चके

तरीके बदले हैं, खर्च नहीं घटा। बल्कि पहले जो कुछ खर्च किया जाता था, वह प्रायः ऐसी चीजोंमें खर्च होता था जो चीजें बुरे समयपर काम आती थीं और उनकी लागतसे कुछ ही कम कीमत चाहे जब बेंचकर वसूल की जा सकती थी; परंतु अब तो जो कुछ खर्च होता है, वह प्रायः स्वाहा ही हो जाता है। फैशनने सबको तबाह कर दिया है। इस सारे अनर्थका कारण हमारी काम-भोग-परायणताकी वृद्धि है और इसके छूटनेका असली उपाय विषय-वैराग्यपूर्वक ईश्वरपरायणता ही है। उस ईश्वरपरायणतामें भजनकी आवश्यकता है और भजन होनेमें आज यह धनकी 'हाय-हाय' बुरी तरह बाधक हो रही है। अतएव अपना, समाजका

और देशका लौकिक-पारलौकिक हित चाहनेवाले प्रत्येक मनुष्यका यह कर्तव्य है कि वह खर्च घटाये, जीवनमें सब ओर सादगीका व्यवहार करे, व्यक्तिगत और समाजगत धनकी फजूलखर्चीको दृढ़ता और बलके साथ नासमझीसे होनेवाली बदनामीको सहकर भी रोके। अधिकतर लोग झूठी कीर्ति या बड़ाईके फेरमें पड़कर ही ज्यादा खर्च किया करते हैं, इस बड़ाईका रूप बदलकर खर्च कम करनेवालेकी बड़ाई करें और उसीके कार्यको अच्छा बतावें। इससे बड़ाईके लोभी भी कम खर्च करने लगेंगे। आजकल विवाह-शादीमें तो जो अनर्थ हो रहा है वह बड़ा ही रोमाञ्चकारी है। खर्चकी भयानकताके कारण लड़कियोंका ब्याह नहीं होने पाता और

अच्छे-अच्छे परिवार इसके लिये दुःखी हो रहे हैं। इसीके कारण प्रायः लड़के-लड़कियोंमें जन्मकालसे ही भेददृष्टि हो जाती है और लड़कियोंके साथ बुरे-से-बुरा अन्यायभरा बर्ताव होता है। राजपूतोंमें इस खर्चकी भयानकताके कारण ही लड़कियोंको जन्मते ही विष देकर मार डालनेका नृशंस पाप शुरू हो गया था। जिसके कई लड़कियाँ हैं, उसका तो जीवन ही दुःखमय बन रहा है। खर्चके भारसे पीड़ित पिता-माताका दुःख न देख सकनेके कारण बंगालमें स्नेहलता आदि कुमारियोंने पहले आत्महत्या कर ली थी, आज भी अपने कारण माता-पिताको दुःखी होते देखकर सयानी लड़कियाँ मन-ही-मन कितना रोती हैं, इस बातको उनका हृदय

ही जानता है। ऐसी स्थितिमें प्रत्येक हृदयवान् गृहस्थको इस विषयपर विचार करके कर्तव्य स्थिर करना चाहिये। कन्याके माता-पिता क्या करें, उन्हें तो किसी प्रकार खेत-जमीन, घर-द्वार बन्धक रखकर वरके माता-पिताको राजी करना ही पड़ता है। परंतु वह हृदयका रक्त दिया जाता है, दहेज नहीं। मेरे मित्र एक सरयूपारी ब्राह्मण हैं, उनके घरमें कई कन्याएँ हैं, एक कन्या विवाह-योग्य है, उसकी उम्र लगभग १८ सालकी हो गयी है। कन्या सुशीला है, बहुत अच्छे ब्राह्मण हैं, परंतु दहेजके अभावमें विवाह नहीं हो पाता। वे बड़े दुःखी हो रहे हैं। कई हजार रकमसे कममें तो कोई बात ही नहीं करता। यू० पी० के एक सज्जनका पत्र मिला है।

वे पहले वकील थे। उनके एक कन्या है। वे लिखते हैं—'कन्या विवाह-योग्य हो गयी है, परन्तु दहेजका प्रश्न सामने है। मैट्रिक पास बालकके पिता तो मोटर बिना बात नहीं करते। यह पाप है और आज हिन्दुओंके घर-घरमें इस पापका दावानल धधक रहा है। मैं प्रत्येक हृदयवान् सत्सङ्गी भाई और बहनोंसे एक विनय करता हूँ, जो घरमें सम्पन्न हैं और जो परमार्थके मार्गपर आगे बढ़ना चाहते हैं, वे अपनी व्यक्तिगत और समाजगत आवश्यकताओंको तुरंत कम कर दें और अपने लड़कोंका विवाह ढूँढ़-ढूँढ़कर बिना दहेज लिये गरीब माता-पिताकी सुयोग्य कन्याओंसे करनेकी प्रतिज्ञा करें। धर्मप्रेमी अविवाहित युवक भी दृढ़ताके साथ यह प्रण

करें कि वे अपना विवाह बिना दहेज लिये ही करें। मेरा विश्वास है कि ऐसा करनेसे उन्हें परमार्थ-मार्गमें बड़ा लाभ होगा।

यह निवेदन सामाजिक दृष्टिसे ही नहीं, शुद्ध परमार्थदृष्टिसे भी है और इसी दृष्टिसे सत्सङ्गी सज्जनों, माताओं और धर्मप्रेमी अविवाहित युवकोंसे प्रतिज्ञा करनेकी प्रार्थना की गयी है; क्योंकि यह विषय भजनमें बड़ा ही बाधक सिद्ध हो रहा है और इस बाधाके दूर होनेकी बड़ी ही आवश्यकता है। क्या मैं आशा करूँ कि धर्मप्रेमी सज्जनोंमें कुछ तो ऐसी प्रतिज्ञा कर ही लेंगे।

वस्तुतः धन अत्यन्त ही तुच्छ पदार्थ है, प्रेमधन परमात्माकी तुलनामें तो यह रखा ही नहीं जा सकता। सूर्य और जुगुनूकी उपमा

भी इसके लिये पर्याप्त नहीं है! इसलिये इस विषयमें वृत्तियोंके अधिक लगानेकी आवश्यकता नहीं है; तथापि आज इस जड-युगमें चारों ओर धनकी पूजा हो रही है और लोग धन-चिन्तामें पड़े हुए ईश्वरको भूल रहे हैं। इसीसे ऐसा लिखा गया है। धन कम खर्च करनेकी इस प्रार्थनासे यह नहीं समझना चाहिये कि इसमें धनका महत्त्व बतलाया गया है; वरं यह समझना चाहिये कि धन अत्यन्त तुच्छ पदार्थ है, व्यर्थ खर्चकर उसके उपार्जनमें समय लगाकर उसका महत्त्व बढ़ाना उचित नहीं। हम अपनी आवश्यकताओंको जितना काम करेंगे, उतना ही धनका महत्त्व घटेगा और उतना ही शीघ्र हम पाप-तापसे छूटकर परमात्माकी ओर अग्रसर हो सकेंगे।

हमारी आवश्यकताएँ ही धनकी लालसा उत्पन्न कर हमें दरवाजे-दरवाजे भटकाती और भगवान्‌से विमुख करती हैं। जिस दिन चाह मिट जायगी, उस दिन हम बादशाह बन जायँगे।

चाह गई चिंता गई मनुआँ बेपरवाह।
जिसको कछू न चाहिये सो जग शाहंशाह॥

× × × ×

जबतक देशमें तिलक या ठहरौनीकी प्रथा जारी है, जबतक लड़केकी अमुक कीमत दहेजके रूपमें माँगी जाती है और जबतक धनके अभावसे कन्याके माता-पिता अपनी प्राणोंकी पुतली कन्याके लिये सुयोग्य वर नहीं पाते, तबतक समाजमें पापकी वृद्धि ही होती जायगी। कुछ समय पहले कलकत्तेमें

एक दिल दहला देनेवाली घटना हुई थी। श्रीयुत किशोरी मोहन मजूमदार नामक एक बंगाली सज्जनकी चार नवयुवती कन्याओंने अफीम खाकर आत्महत्याकी चेष्टा की, जिनमें तीन मर गयीं और एक बची। मजूमदार महोदय कुलीन ब्राह्मण थे। उनके सात लड़कियाँ थीं। तीनका विवाह वे कर चुके थे और उन तीन विवाहोंमें ही उनका सब कुछ स्वाहा होकर ऋण हो गया था। अब उनके पास दहेज देनेके लिये धन नहीं था और बिना धनके लड़के नहीं मिलते थे। रात-दिन घरमें दुःख रहता था। पिताको इस प्रकार रात-दिन अपने लिये जलते देखकर सयानी लड़कियोंने अपना अन्त कर डालना ही उचित समझा और इसीलिये उन्होंने जहर

खा लिया। यद्यपि आत्महत्या एक प्रबल नैतिक दोष है और धार्मिक दृष्टिसे भी बड़ा पाप है। इसका समर्थन नहीं किया जा सकता। तथापि गरीब पिताकी कन्याओंने जिस परिस्थितिमें पड़कर अत्यधिक मनोवेदनाकी हालतमें जो कुछ किया, उसके देखनेसे प्रत्येक सहृदय मनुष्यकी उनके प्रति सहानुभूति होगी। पता नहीं, घरोंमें गुपचुप ऐसी कितनी दुःखभरी घटनाएँ होती होंगी, साथ ही कितने माता-पिताओंको घुल-घुलकर मरना पड़ता होगा। यह मामूली सामाजिक पाप नहीं है, बहुत बड़ा पाप है। मैं प्रत्येक हृदयवान् अविवाहित नवयुवकसे और उनके धर्मप्रेमी माता-पिताओंसे ईश्वर और धर्मके नामपर अपील करता हूँ कि

वे बिना दहेज लिये विवाह करनेका प्रण करें और इस भयानक पापकी जड़ काटनेमें क्रियाशील सहायक बनें

दहेजसे उत्पन्न भीषण बुराइयाँ

एक पिताके तीन लड़कियाँ थीं। दोके विवाह बड़ी कठिनतासे हो पाये थे। तीसरीका सम्बन्ध किया। बरात आयी, पर धन न होनेसे मुँहमाँगा दहेज नहीं दिया जा सका। बरात बिना विवाह किये लौट गयी। कन्याके दुःखी पिताने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली। कन्या और उसकी माता कुएँमें गिरकर मर गयी।

एक कन्याके पिताने अपने रहनेका पैतृक बड़ा मकान बंधक रखकर कन्याके विवाहमें दहेज दिया। मकान छुड़ाया नहीं जा सका, नीलाम हो गया। सारा परिवार बिना घरके हो गया।

एक कन्याकी विधवा माताने किसीसे

ऋण लेकर कन्याका विवाह किया। ऋण देनेवालीकी पाप-बुद्धि हो गयी। उसने अपनी इच्छा जतायी। अस्वीकार करनेपर नालिश करके मकान नीलाम करवा दिया और उसे जबरदस्ती रास्तेमें निकाल दिया गया।

एक कन्याके पिताने पहली कन्याके विवाहमें ऋण लिया था। दूसरी कन्याका विवाह किसी तरह ठीक किया। पहला ऋण चुका नहीं था। दूसरी कन्याके विवाहके समय ऋणदाताने वारंट लाकर कन्याके पिताको गिरफ्तार करा दिया। कन्याने दुःखके मारे किरासिन तेल डालकर आत्महत्या कर ली।

एक कन्याकी सगाई हो गयी थी, कन्या

सोलह वर्षकी थी; विवाहकी तिथि निश्चित हुई। डेढ़ वर्ष आगे लगन नहीं था। वरके पिताके ठीक विवाहकी तिथिसे तीन दिन पहले विवाहसे इन्कार कर दिया; क्योंकि उसको किसी दूसरी कन्याके पिताने अधिक रुपये तथा एक मोटर देनेका लालच दे दिया था। कन्याके पिताका यह सुनते ही हार्टफेल हो गया।

भारतवर्षके एक महान् श्रेष्ठ पुरुषके घरकी कन्याओंका २८, ३० सालकी होनेपर अर्थाभावसे विवाह नहीं हो पाया है और उनके माता-पिता बड़े दुःखी हैं।

ऐसी लाखों घटनाएँ घर-घर होती होंगी। हमारी जानकारीमें जो अनेकों घटनाएँ हैं, उनमेंसे कुछ ऊपर लिखी हैं। इनको पढ़कर

भी क्या कोई सन्देह रह जाता है कि ऐसा दहेज दहेज नहीं है, यह कन्यापरिवारका रक्त है और कन्यापरिवारकी बुरी आत्महत्या और उनके घुल-घुल मरनेकी व्यवस्था है। वर-पक्षके लोग तथा विवाहके योग्य लड़के लाखोंकी संख्यामें प्रतिज्ञा करें कि वे बिना दहेजके ही विवाह करेंगे।

दाम्पत्य-जीवनके पालनीय धर्म

पत्नीके कर्तव्य—

पतिको ईश्वरवत् मानकर सब प्रकारसे उनको सुख पहुँचाये।

पतिकी सेवाको ही अपना स्वभाव बना ले।

पतिके माननीय माता-पिता आदिका सेवा-सम्मान करे।

पतिके आदेश या सम्मतिके अनुसार घरकी सारी व्यवस्था करे।

पतिसे कोई भूल हो जाय तो उसे बिना किसी क्षोभके शान्तभावसे सहन कर ले।

पतिके अतिरिक्त अन्य पुरुषमात्रको अपने

पिता, भाई तथा पुत्रके समान समझे। बिना काम किसीसे भी मिले नहीं।

पतिके अतिरिक्त किसी पुरुषका जान-बूझकर स्पर्श न करे, न किसीको माला पहनाये। चरणस्पर्श भी न करे।

पतिके प्रतिकूल कोई भी कार्य न करे। पतिके अनुकूल हो तो भी पापकर्म न करे।

पतिके अनुकूल निर्दोष कार्य सदा-सर्वथा प्रफुल्ल चित्तसे करे।

पतिको उनके मनके या घरकी परिस्थितिके प्रतिकूल गहने-कपड़े आदिके लिये न कहे, तंग तो कभी करे ही नहीं।

पतिका कभी तिरस्कार-अपमान न करे, कोई चुभती बात न कहे।

पतिके विचारोंका उग्र खण्डन न करे;

कभी कुछ कहना हो तो जब वे प्रसन्न हों, तब नम्रतासे कहे।

पतिके सामने सदा हँसमुख तथा विनययुक्त रहे।

पतिके सिवा किसीको गुरु न बनाये।

पतिकी व्यक्तिगत सेवा-सुविधाका कार्य यथासाध्य स्वयं करे।

पतिके लिये ही शृङ्गार करे, शौकीनी अथवा दिखावेके लिये नहीं ।

पतिको जिससे दुःख पहुँचे, ऐसी बातकी कभी भूल-चूककर कल्पना भी न करे।

पति न चाहते हों तो उनके सामने अपने माता-पिता या नैहरवालोंकी प्रशंसा न करे।

पतिके मित्रों, प्रतिनिधियोंका पतिके इच्छानुकूल ही निर्दोष स्वागत-सत्कार करे।

पतिको धार्मिक कार्योंमें प्रवृत्त, प्रोत्साहित करे, पर उनके सेवा-धर्ममें विघ्न न डाले।

पतिके कर्तव्य—

पत्नीको अपनी दासी न मानकर सम्मान्य मित्र माने तथा उसे यथासाध्य सुख पहुँचाये।

पत्नीकी (आवश्यकता होनेपर) सेवा करनेमें जरा भी न हिचके।

पत्नीके माता-पिता आदिका सदा सम्मान करे, उनके लिये कोई अपमान या निन्दाजनक शब्द कभी न कहे।

पत्नीसे सलाह लेकर घर-सम्बन्धी सब कार्य करे।

पत्नीसे कोई दोष हो जाय तो उसे डाँटे नहीं, प्रेमसे समझा दे और उसे नीचा देखना पड़े, ऐसा बर्ताव न करके सहज क्षमा कर दे।

पत्नीके सिवा किसी पर-स्त्रीसे किसी प्रकारका सम्बन्ध न रखे। सबको माता, बहिन और पुत्रीके समान समझे।

पत्नीके अतिरिक्त किसी भी पर-स्त्रीका जान-बूझकर स्पर्श न करे, उसके द्वारा माला आदि न पहने। चरणस्पर्श भी न कराये।

पत्नीके मनके प्रतिकूल कोई कार्य न करे। पत्नीके अनुकूल हो तो भी पाप-कर्म न करे।

पत्नीके अनुकूल निर्दोष बर्ताव करे। पत्नीसे अपनी ओरसे पूछकर, घरकी परिस्थितिके अनुकूल, पत्नीके इच्छानुसार कपड़े, गहने या अन्यान्य चीजें मँगवा दे, बनवा दे।

पत्नीका कभी भी तिरस्कार-अपमान न करे, न कड़ी बात कहे, न धमकाये-डराये? कभी हाथ तो भूल-चूककर भी न उठाये। यह बड़ा पाप है।

पत्नीको उसके विचार तथा श्रद्धाके अनुसार धर्मसाधनादि करने दे, उसमें बाधा न डाले।

पत्नीको निर्दोष विनोद तथा प्रेमयुक्त बर्तावसे प्रसन्न रखे।

पत्नीको अपनी स्थितिके अनुसार दान-पुण्यादिके तथा अन्य व्ययके लिये प्रसन्नता-पूर्वक पर्याप्त धन देता रहे।

पत्नीको तीर्थयात्रा आदिमें साथ रखे।

पत्नीको दीर्घकालतक अकेले न रखे।

पत्नीसे कभी यह न कहे कि तुम अपने

माता-पितासे मुझे धन लाकर दो और न उससे धन न मिलनेपर नाराज ही हो।

पत्नीको कभी पापकर्ममें प्रवृत्त होनेके लिये न कहे।

‘मैं प्रत्येक हृदयवान् अविवाहित नवयुवकसे और उनके धर्मप्रेमी माता-पिताओंसे ईश्वर और धर्मके नामपर अपील करता हूँ कि वे बिना दहेज लिये विवाह करनेका प्रण करें और इस भयानक पापकी जड़ काटनेमें क्रियाशील सहायक बनें।’

—लेखक

जिस प्रकार अग्निमें दाहिकाशक्ति स्वाभाविक है, उसी प्रकार भगवन्नाममें पापको—विषय-प्रपंचमय जगत्के मोहको जला डालनेकी शक्ति स्वाभाविक है। इसमें भावकी आवश्यकता नहीं है। किसी भी प्रकार नाम जीभपर आना चाहिये, फिर नामका जो स्वाभाविक फल है, वह बिना श्रद्धाके भी मिल ही जायगा। तर्कशील बुद्धि भ्रान्त धारणा करवा देती है कि बिना भावके क्या लाभ होगा। पर समझ लो ऐसा सोचना अपने हाथों अपने गलेपर छुरी चलाना है। नाम भगवत्स्वरूप ही है। नाम अपनी शक्तिसे, नाम अपने वस्तुगुणसे सारा काम कर देगा। विशेषकर कलियुगमें तो भगवन्नामके सिवा और कोई साधन ही नहीं है ।

(**सत्सङ्गके बिखरे मोती** नामक पुस्तकसे)